

अहिंसा के दूत
कलास -६
विषय -हिन्दी
पाठ -२
PPT-3

CHANGING YOUR TOMORROW

पाठ

- पेड़ पर चढ़ते मोहन की टाँग खींचकर भाई ने मोहन को जमीन पर गिरा दिया। अधिक चोट तो नहीं लगी पर कुछ खरोंचे उनके
- शरीर पर अवश्य आ गईं। मोहन उठकर जैसे ही खड़े हुए, बड़े भाई ने
- उनके मुँह पर तमाचा मारते हुए कहा-"क्यों रे, मोहन! कितनी बार कहा
- है कि पेड़ पर नहीं चढ़ना।
- मोहन ने रोते हुए माँ से कहा-"देखो माँ, बड़े भाई ने हमें मारा है।"
- माँ ने पूछा-"तुमने कोई शरारत की होगी?"
- मोहन ने कहा-"शरारत नहीं की, बस पेड़ पर चढ़कर हवा का आनंद
- ले रहा था।"
- माँ ने कहा-"तुम्हारा मतलब है भाई ने तुम्हें बेवजह मारा है। तुम भी
- जाकर उसे मारो।"



पाठ

- यह सुनकर मोहन उदास हो गया और कहा-"माँ, वे मुझसे बड़े हैं। आप
- मुझे बड़ों को मारना क्यों सिखाती हो?"
- माँ ने कहा-"बेटा, भाइयों में तो ऐसी नोक-झोंक होती ही रहती है।"
- "नहीं माँ, मैं भैया के तमाचे का जवाब तमाचे से नहीं दे सकता। आप
- मारने वाले को नहीं रोकती, मुझे मारना सिखाती हो।"
- माँ ने बालक गांधी को गोद में भरकर कहा-"तुम्हें ऐसे जवाब कहाँ से
- सूझते हैं, रे मोहन?"
- गांधी जी के बचपन की यह घटना हमें सिखाती है कि हिंसा का बदला,
- हिंसा से नहीं बल्कि अहिंसा से भी लिया जा सकता है। गांधी जी मन
- वचन और कर्म से जीवन भर इसी सिद्धांत का पालन करते रहे। भारत के
- इतिहास में उन्हें 'अहिंसा के पुजारी' या 'अहिंसा के अवतार' नाम से याद
- किया जाता है।



पाठ

• जीवन-सूत्र

- मनुष्य क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से, लाभ को दान से और मिथ्या
- भाषण को सत्य से जीत सकेगा।
- -गौतम बुद्ध



शब्दार्थ

- टाँग –शरीर का वह निचला भाग जिसपर धड़ ठहरा रहता है और जिससे प्राणी चलते या दौड़ते हैं । साधारणतः जाघ की जड़ से लेकर एड़ी तक का अंग जो पतले खंभे या डंडे के रूप में होता है, विशेषतः घटने से लेकर एड़ी तक का अंग । जीवों के चलने फिरने का अवयव ।
- जमीन –1. भूमि ; खेत 2. पृथ्वी ; धरती 3. धरातल का कोई भाग
- खरोंचें –निशान
- तमाचा –थप्पड़
- शरीर –नुष्य के समस्त अंगों का समुच्चय
- शरारत –बदमाशी , दुष्टता।
- बेवजह –बिना कारण
- उदास –दुःखी
- नोक –झोंक



पाठ व्याख्या

- मोहन छपकर जब पेड़ पर चढ़ रहे थे तब बड़े भाई यह सब खिड़की से देख कर बाहर आ गए और मोहन की टाँग को खींच कर नीचे गिरा दिए । इससे थोड़ा सा खरोंच आ गया । उसके उपरांत बड़े भाई मोहन को थप्पड़ मारते हुए कहा कितनी बार कहा कि पेड़ पर इस तरह मत चढ़ो । मोहन ने रोते हुए माँ को सारी बातें बतलाई । माँ ने कहा शायद तूने कोई शरारत की होगी । इसके उत्तर में मोहन ने कहा नहीं माँ मैंने कुछ नहीं की । मुझे पेड़ पर चढ़ना अच्छा लगता है इसलिए मैं पेड़ पर चढ़ रहा था । माँ ने कहा यदि भाई तुझे बिना कारण थप्पड़ मारा तो तुम भी जाकर उसे एक थप्पड़ लगाके आओ । यह सुनकर मोहन उदास होकर कहा माँ आप मुझे सिखाए थे कि बड़ों को मारना नहीं चाहिए । मैं तमाचे का जवाब तमाचे से नहीं दे सकता । आप मारने वाले को न रोककर मुझे मारने के लिए क्यों कहते हो तूने इतनी अच्छी बातें कहाँ से सीखीं ? । इस प्रकार उत्तर सुनकर माँ हैरान हो गई।
- मालूम नहीं कि ईश्वर ने तेरे लिए क्या भाग्य रचा है?’ आगे चलकर इसी मोनिया ने महात्मा गांधी के रूप में न केवल अपने देश, बल्कि विदेशों से भी अगाध श्रद्धा पाई और आज वे विश्व के महान आदर्श माने जाते हैं। सार यह है कि बड़ों का सम्मान छोटों का कर्तव्य है, किंतु इसकी शिक्षा बड़ों को अपने आचरण के द्वारा छोटों को देनी चाहिए।
-

व्याकरण

- लिंग बदलिए -
- पिता -
- भाई -
- बालक -
- बेटा -
- वचन बदलिए -
- टहनी -
- खिड़की -
- तमाचा -
- हवा -



गृहकार्य

- कौन टाँग खींच दिए ?
- कितनी बार कहा पेड़ पर मत चढ़ना –किसने किससे कहा और क्यों कहा ?
- कौन किसको तमाचा मारा ?
- मोहन रोते हुए किसके पास गया ?
- माँ ने मोहन से क्या पुछा ?
- माँने येसा क्यों कहा कि तुम भी जाकर उसे मारो ।
- मोहन क्यों उदास हो गया ?
- मोहन ने येसा क्यों कहा कि मुझे मारना क्यों सीखाते हो ?
- माँ ने मोहन को गोदी में भरकर क्या कहा ?
- पाठ में बुद्धदेव के वाणी के बारे में क्या बताया गया ?
- पाठ का संदेश क्या है ?



THANKING YOU
ODM EDUCATIONAL GROUP